BA-I

हमरा लगा रहब ?

डॉ० पंकज कुमार

श्री प्रभास कुमार चौधरी मैथिली साहित्यक ~~मे~~ उपन्यास क्षेत्र मे देदीप्यमान नक्षत्रक रूपमे अवतरित छथि। प्रभासक उपन्यास मैथिल समाजक जीवित दस्तावेज अछि। हिनक पाँच गोट उपन्यास अद्यावधि प्रकाशित अछि :- (i) अभिशप्त (ii) युग-पुरुष (iii) हमरा लगा रहब? (iv) नवारम्भ (v) राजा पोखरिमे कतेक मछरी।

शिखर उपन्यासकार प्रभास कुमार चौधरीक सब उपन्यास आत्मकथाक शैलीमे लिखल गेल अछि। सत्यान्वेषी जीवन दृष्टि, मौलिक चिन्तन, सहज आयाम, गहन मनोविश्लेषण ओ सुदृढ़ चारित्रिक मूल्य प्रभासक रचनामे विलक्षण अछि, ओ एक सहज असाधारण शिल्पकार भेलाह जे साहित्यक युगसँ युगान्तरक मोहक स्वप्न सजाओल।

हिनक औपन्यासिक पटकथा पर प्रकारेको अन्य उपन्यासकारक प्रभाव पड़ल छैक। मणिपद्मक रचना सदृश अतिशयोक्ति ओ अतिरंजनाक समावेश हिनक रचनामे अछि। ललित सँ सर्वाधिक प्रभावित ई वर्ग संघर्षक ~~प्रवृत्तिकें~~ आन्दोलनकें गति प्रदान करैत ~~अछि~~ छथि। राजकमलक अर्थ-कामक दोहरी पाटमे पिसाइत नारीक

ओरा ऊर्जाकें रेखांकित कयलनि। हिनक नारी-पात्रमे राजकमलक यौन-तृष्णासँ बेसी शरदक स्त्री-पात्रक आकर्षण ओ रहस्यमता अछि। मायानन्दक रोमांसक आसवक हृदयक विदारताक ~~कथ्यानि~~ सदृशो ई पुरुष-नारीक ~~ओहेन~~ पवित्र संबंध बनु नहि गेलनि झुकाव अपन रचनामे सहज संप्रेषणीयता मधुर हार्दिकता, प्रियता ओ बहुरंगतामे जीवकान्तकें पछाड़ि दैत छथि। विस्मय-कारी विह्वलता ओ रोमांचक मधुमयता हिनका सबलँ वेद्य बना दैत अछि।

प्रभासक प्रायः सब उपन्यास सामाजिक-राजनीतिक धरातलपर सृजित अछि। अपन उपन्यासमे ग्राम, परिवार, समाज, राष्ट्र ओ मानवीय क्षितिजक कोन-कोनकें विकल जीवन-त्रासदी ओ आदर्श-वादक पराजयक अकथ व्यथाक चित्रण कयलनि सत्य ओ स्वस्थ जीवमूल्यकें केन्द्रमे राखि ई नारपिशाचक शक्ति-लीलाक समग्र रण-ताण्डवकें उद्घाटित करैत ~~अ~~ छथि, तें हिनक प्रत्येक कथानक कोरा आदर्श-वादी, प्रचण्ड आशावादी दुर्दान्त दस्युक समाजमे डेरबुक आ दयनीय दुखान्तक पर आधारित अछि।

सामन्ती विलासिता ओ सामाजिक

विषमताक जघन-चपेटमे दम तोड़ैत हिनक नारी-पात्रमे अधिक शील वैचित्र्य अछि। युग-युगासँ दलित आ पीड़ित नारी-चेतनाक विस्फोट प्रभासक कथाक विशिष्ट गढ़ थिक।

'हमरा लग रहब' प्रभासक सर्वश्रेष्ठ औपन्यासिक कृति अछि। एहिमे सामन्ती किसानक स्वच्छ व्यंग्य-विदूषक चित्र-पट पर नारीक मर्मान्तिक शोषण दमन ओ विवशता बाध्यता कें कथा कहल गेल अछि। एहिमे यथार्थ आदर्श ओ स्वार्थ-परमार्थिक गहन संघर्षमे विवाह-असंगति आ प्रेम परित्यागक घनघोर संघट्टक दिग्दर्शनमे एतय कतेको अनुद्घाटित अंशकें उद्घाटित कएल गेल अछि। कथानायक प्रणव जीवनादर्श ओ मानवीय ऊर्जाक ओ शक्ति स्रोत थिक जकरा चारूकात पापाचार, भ्रष्टाचार, अनाचार, पैशाचिकता अपन सदिखन उपस्थिति रखैत अछि। आत्मसमान प्रणवमे प्रभासक आत्मा बाजैत अछि। सौंसे दुनियाँक लेल अमृत लुटौनिहार प्रणव अंततः माता-पिता, मामा-मामी, प्रेमिका, बन्धु-बान्धव, इष्ट-मित्र, धर्म-भ्राता ओ धर्म-पुत्र, धन, जमीन-जत्था समस्तसँ निरस्त भऽ दम अलगार रहि जाइत अछि।

टुटैत गाम, टुटैत समाज

टुटैत परिवार, आ टुटैत व्यक्ति -एवं सम्बन्ध ओ व्यवस्थाक प्रति मोहभंगक कथा कहैछ। कथा नायिका शीलाक त्रासदी अत्यन्त गाढ़ता आ तलस्पर्शी अछि। प्रणवक सखा, बान्धवी प्रेयसी ओ रक्षिता शीला मोन प्राणसँ नायक मे संशक्त रहितहुँ सर्वथा विलग अछि। शीला - प्रणवक एहि 'प्लैटोनिक-लव'मे जुगनी-रानिक पद-पदार्थमे अन्वित अछि। शीलामे आधुनिक नारीक सम्पूर्ण अधिकार-चेतना अछि जे गामसँ नगर धरिकें आन्दोलित करैत अछि। अपन स्वावलम्बन ओ आत्म निर्भरताक समुद्योगमे ओ व्यवस्थाक पोल फोलि दैछ ~~अछि~~। शीलाक बहिन माला प्रतिघात ओ प्रतिक्रियामे मैथिल समाजक कुलीन तंत्र आ हरिसिंह देवी पञ्जी-व्यवस्थाक बखिया उधेरि देल गेल अछि। भयंकर यौन-कुण्ठा, विपथगामिता आओर अगम्यागमन समाजक सामन्ती मनोवृत्तिक अनावरण करैत अछि। शोषित-वंचित मालाक बेटा अमितक पुरुषत्व-प्राप्तिमे क्रान्तिकारी प्रयोगशीलता अछि। बिन पिताक पुत्रक बाप बनि प्रणव पुराके समर्थ वाणी प्रदान करैछ। खलनायक रूपमे कल्लू-चौधरी एवं रुदल-चौधरी बहुत सशक्त रूपमे उभरल छथि। मुनेसर पासवान आ मधुक प्रतिपक्षीय भूमिका अनुरूप नेता लोगनिक कुटिल तन्त्रक सब कच्चा चिट्ठा।

उद्घोषित दैत अछि। एहि प्रकारक अनेक विलक्षणता 'हमरा लग रहब' मे देखल जा सकैछ।

एवं प्रकारें नारीस्वरक लहरदारताक विद्रोह आ प्रतिहिंसाक दाहक-ज्वाला, सम्मोहनक इन्द्रजाल, शोषण-दमनक झंझावत आ नारीक मान-सम्मान ओ शील मर्यादाक गूढ़-गंभीर प्रश्नक मध्य प्रणव सदृश प्रतिभावान ओ ओजशील युवकक कथा माध्यमे कें श्री प्रभाष कुमार चौधरी 'हमरा लग रहब' उपन्यास मध्य विलक्षण रूपें दृष्टिगोचर करौने छथि।

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय,
राजनगर, मधुबनी